(4) औद्योगिक वस्तु के लिए बाजार — शासक देश अपने उपनिवेशों को औद्योगिक वस्तुओं के लिए बाजार बना लेते हैं और उन देशों के परम्परागत उद्योगों को जानबूझ कर नष्ट करने की नीति अपनाते हैं। इसके लिए वे परम्परागत वस्तुओं को अपना यहाँ न आने देने के भारी आयात कर लगाते हैं और अपने पक्के माल को शासित देशों में लाने पर कोई कर नहीं लगाते। इससे शासक देशों में तो औद्योगिक विकास होता है मगर शासित देश इनको मात्र किफाने लगता है।

(5) विदेशी पूंजी को प्रोत्साहन — औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था की एक विशेषता यह है कि इनमें विदेशी पूंजी को खूब प्रोत्साहन किया जाता है। इसके लिए विदेशियों को अनेकों सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। भारत में इस प्रकार की विदेशी पूंजी बागान उद्योगों में लगाई जाती है।

(6) सम्पत्ति का निकास — इस प्रकार जो धन वे अपने उपनिवेशों से प्राप्त करते हैं उसे वे अपने देश ले जाते हैं और वहां उसका विनियोग किया जाता है। इस प्रकार उपनिवेशों की पूंजी उनके देश से निकलकर शासक देशों में चली जाती है।

(2) अर्द्ध-सामन्तवादी अर्थव्यवस्था — अंग्रेजों ने भारत में आकर अर्द्ध-सामन्तवादी अर्थव्यवस्था को जन्म दिया। इस अर्थव्यवस्था में एक ओर सरकार व दूसरी ओर सामन्त थे इस प्रकार इसमें सरकार व सामन्त दोनों के ही अधिकार थे। इसलिए इसको अर्द्ध-सामन्त कहा गया। यहां सामन्त से अर्थ उन लोगों से था जो अंग्रेज सरकार द्वारा नियुक्त किये जाते थे और जो अंग्रेज सरकार के लिए उत्तरदायी थे। भारत में इनका नाम जमींदार था। भारत में इस सामन्तवाद की शुरुआत उस समय हुई जबकि सामन्तवाद संसार से विदा किया जा रहा था।

(3) पिछड़ी अर्थव्यवस्था — "जिस देश में गरीबी होती है पूंजी निर्माण की दर कम होती है लोगों का जीवन स्तर निम्न होता है और विकास की दर लगभग शून्य होती है तो ऐसे देश की अर्थव्यवस्था को पिछड़ी अर्थव्यवस्था कहते हैं।" अंग्रेजों ने जब भारत छोड़ा था तो उस समय भारतीय अर्थव्यवस्था पिछड़ी हुई थी। इस बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ बातों का हम अध्ययन करेंगे।

(A) प्रतिव्यक्ति आय — श्री के. मुखर्जी के अनुसार वर्ष 1947 में जो प्रति व्यक्ति आय थी वह सन् 1901 में प्रति व्यक्ति आय के बराबर थी लेकिन सुरेन्द्र जे. पटेल के अनुसार इस काल में कुछ वृद्धि हुई थी। कुछ अन्य विद्वानों ने भी इस सम्बन्ध में अपने अनुमान लगाये थे लेकिन यह सभी तुलनात्मक नहीं थे क्योंकि इनके आधार अलग-अलग थे। अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था इसलिए पिछड़ी हुई थी क्योंकि यहां की प्रति व्यक्ति आय या तो स्थिर थी या फिर उसमें

Scanned with CamScanner

सी वृद्धि हो सकी थी के.पी. एस सुन्दरम के अनुसार "स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारतीयो की प्रति व्यक्ति आय विश्व मे सबसे कम थी"।

(2) गरीबी — एक देश मे व्यापक गरीबी इस बात का संकेत होती है कि वहां की अर्थव्यवस्था पिछड़ी हुई है लेकिन इस बात के आंकड़े उपलब्ध नहीं है कि जिनसे यह सिद्ध किया जा सके कि भारत मे उस समय गरीबी थी। विलियम डिग्बी ने अपनी पुस्तक England and India मे लिखा है कि "भारत की 50 करोड़ आबादी अपर्याप्त भोजन पर अपना जीवन निर्वाह करती है।"

(3) मजदूरी — भारतीय अर्थव्यवस्था इसलिए भी पिछड़ी हुई थी क्योंकि यहां मजदूरी की दरें बहुत ही नीची थी। डॉ. राधाकमल मुखर्जी के अनुसार यहां की वास्तविक मजदूरी की दरें अंग्रेजों की नीतियों के फलस्वरूप घट गई थी लेकिन स्वतंत्रता मिलने के समय इनमें कुछ सुधार आरम्भ हुआ था। लेकिन फिर भी ये अन्तर्राष्ट्रीय स्तर से बहुत नीची थी।

(4) परम्परागत कृषि — भारतीय अर्थव्यवस्था इसलिए भी पिछड़ी मानी गई कि यहां परम्परागत ढंग से ही खेती होती थी। वे ही लकड़ी के हल व बैल खेती के उपयोग मे लाये जा रहे थे। सिंचाई के लिए भी वर्षा पर ही निर्भर रहना पड़ता था।

(5) कमजोर औद्योगिक ढांचा — भारतीय अर्थव्यवस्था इसलिए भी पिछड़ी थी क्योंकि यहां का औद्योगिक ढांचा कमजोर था। ब्रिटेन की नीतियों के फलस्वरूप यहां के परम्परागत उद्योग नष्ट हो चुके थे यद्यपि कुछ नवीन उद्योगों की स्थापना की शुरुआत आरम्भ हो गई थी।

(6) जनसंख्या का व्यावसायिक आधार पर वितरण — भारत में जनसंख्या का व्यावसायिक आधार का वितरण भी इस प्रकार का था जिसमे अधिकांश जनसंख्या कृषि व उससे सम्बन्धित कार्यों मे लगी थी।

Scanned with CamScanner